विशाखा देसाई

एशिया सोसायटी: मैत्री की मशाल

रमोला तलवार बदाम

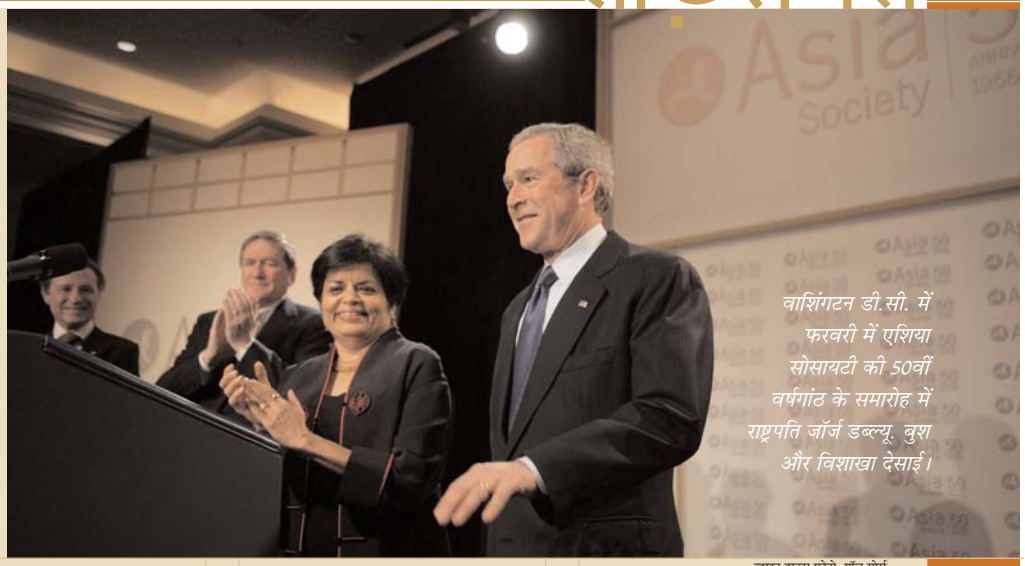

वाशिंगटन डी.सी. में फरवरी में एशिया सोसायटी की 50वीं वर्षगांठ के समारोह में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और विशाखा देसाई।

व्हाइट हाउस फोटो: पॉल मोर्स

पचास साल पुराने गैरलाभकारी संगठन एशिया सोसायटी के शीर्ष पद पर विराजमान विशाखा देसाई के कामकाज को अंग्रेजी के तीन सी के जरिये समझा जा सकता है। ये हैं- कल्चर (संस्कृति), क्रिएटिविटी (रचनात्मकता) और करंट अफेयर्स (ताजा घटनाक्रम)। एशिया सोसायटी एशियाई और अमेरिकी लोगों के बीच सांस्कृतिक समझ को मजबूत करने में जुटी हुई है।

विशाखा देसाई इस स्वयंसेवी सोसायटी की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला होने के साथ ही इस जगह तक पहुंचने वाली एशियाई मूल की पहली अमेरिकी नागरिक हैं। एशिया सोसायटी की स्थापना करोड़पति दानदाता जॉन डी. रॉकफेलर-तृतीय ने की थी। विशाखा वर्ष 2004 में अमेरिका के एक पूर्व राजदूत निकोलस प्लैट के अवकाश ग्रहण करने के बाद इसकी अध्यक्ष बनीं। विशाखा को किसी तमगे की ज्यादा चाहत नहीं है, पर वह इस बात को याद करके खुश होती हैं कि उनके चयन में उनकी नस्ल और उनके महिला होने का फर्क नहीं पड़ा। उन्हें दो सौ उम्मीदवारों में से चुना गया। वह साथ ही यह भी स्पष्ट करती हैं कि उनको एक महिला या एशियाई अमेरिकी होने के कारण इस पद के लिए नहीं चुना गया। वह इस पद के साथ जुड़ी अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी महसूस करती हैं। उनका कहना है कि, ''बहुत से लोग आपको एक रोल मॉडल की तरह देखने लगते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि मैं कोई रोल मॉडल बन गई हूं। लेकिन लोग आपको इस तरह लेते हैं।''

विशाखा ने 1990 में सोसायटी के संग्रहालय और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के निदेशक के रूप में इस संस्था में प्रवेश किया था। इसके बाद उन्होंने सोसायटी के उपाध्यक्ष और वरिष्ठ उपाध्यक्ष का कार्यभार संभाला। इससे पूर्व वह बोस्टन के ललित कला संग्रहालय में भारतीय, दक्षिण-पूर्व एशियाई और इस्लामिक कला के संरक्षण की जिम्मेदारी निभा रही थीं। उन्होंने मैसाच्युसेट्स विश्वविद्यालय, बोस्टन यूनिवर्सिटी और कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य भी किया। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में हमेशा से रुचि रखने वाली विशाखा कहती हैं कि संग्रहालय कॅरिअर को अपनाना एक संयोग था।

विशाखा अभी पिछले दिनों एशिया सोसायटी के 16वें एशियाई कॉर्पोरेट सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए मुंबई आई हुई थीं। यह सम्मेलन विश्व व्यापार, भारत की नई प्राथमिकताओं और एशिया की नई वास्तविकताओं पर केंद्रित था। इस दौरान हुई बातचीत में उन्होंने कहा कि संग्रहालय ऐसी जगह होते हैं जहां आप अपनी संस्कृति से रूबरू होते हैं। ''मैं व्यक्तिगत रूप से मानती हूं कि कला सिर्फ सौंदर्य का प्रतीक ही नहीं होती है, बल्कि सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने में भी यह अहम भूमिका निभाती है।''

अहमदाबाद में पैदा हुई विशाखा सबसे पहले 17 साल की एक हाईस्कूल छात्रा के रूप में अमेरिका गईं और एक साल वहां रहीं। इसके बाद वह बॉम्बे विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री लेने के लिए वापस आईं। फिर वह 20 साल की उम्र में मिशिगन विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर डिग्री और पीएचडी करने के लिए पुनः अमेरिका गईं। विशाखा मानती हैं कि उनका मौजूदा पद उनसे राजनीति विज्ञान, कला और संस्कृति में रुचि लेने की मांग करता है। उन्हें एक ऐसे संस्थान की प्रमुख बनने की चुनौती स्वीकार करने में आनंद आता है जो अंतर्राष्ट्रीय बिजनेस सम्मेलन, व्याख्यान, कला प्रदर्शनियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम और एशिया के बारे में जानकारी देने के लिए विभिन्न आयोजन करता है।

वह कहती हैं कि यह कुछ-कुछ ऐसा ही है जैसे आप किसी विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट बन जाते हैं। आप विद्वान हैं, प्रतिभा के धनी हैं, लेकिन आपको अचानक लगता है कि जिंदगी में आपकी और भी आकांक्षाएं हैं, और भी लक्ष्य हैं। यहां से कुछ नया करने की कसमसाहट जन्म लेती है। यह कसमसाहट कोई नया पद या नया कौशल हासिल करने तक ही सीमित नहीं रहती। यह तो अपनी योग्यता को साबित करने, पूर्ण बनने और उन क्षमताओं के इस्तेमाल से जुड़ी है जिनके बारे में आपको पहले पता भी नहीं होता।

विशाखा को सोसायटी का काम संभालने में घरेलू मोर्चे पर भी बहुत मदद मिलती है। इसका राज यह है कि उनके पति रॉबर्ट ऑक्सनैम भी 1981 से 1992 तक एशिया सोसायटी के अध्यक्ष रह चुके हैं। वह मजाक में कहती हैं कि हमारी जोड़ी तो भारत-चीन विशेषज्ञों की जोड़ी है- ऑक्सनैम चीनी विद्वान हैं। वह मुस्कराकर कहती हैं कि देखा जाए तो इस तरह हम पूरा एशिया कवर कर लेते हैं।

विशाखा विकास के मोर्चे पर भारत की जबर्दस्त रफ्तार से चकित हैं। वह इसे विस्फोटक और अविश्वसनीय मानती हैं। वह कहती हैं कि अगर इस बारे में आपने दो साल पहले कोई भविष्यवाणी की होती, तो मैं उस पर यकीन नहीं कर पाती। पिछले साल जहां चीन की अर्थव्यवस्था ने 9.9 प्रतिशत की दर से वृद्धि की, वहीं भारत की दर आठ फीसदी थी। भारत की अर्थव्यवस्था आज दुनिया की दूसरी सबसे तेज गति से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। इस रफ्तार का फायदा उठाने के मकसद से एशिया सोसायटी ने मुंबई के नरीमन पॉइंट में मार्च में अपना पहला केंद्र खोला है जिसमें तीन लोग हैं। सोसायटी के कार्यकारी निदेशक बंटी चंद कहते हैं कि भारत में हमारी बड़ी प्रस्तुति नई दिल्ली में इस साल नवंबर के आखिर में लगने वाली समकालीन कला की प्रदर्शनी 'द ऐज ऑफ डिजायर' होगी।

एशिया सोसायटी का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है। वॉशिंगटन, हांगकांग, ह्यूस्टन, लॉस एंजिलीस, सैन फ्रांसिस्को, मेलबर्न, मनीला और शंघाई में इसके क्षेत्रीय केंद्र हैं। विशाखा को उम्मीद है कि उनका भारत स्थित कार्यालय जल्द ही सोसायटी का दक्षिण एशिया केंद्र बन जाएगा। इस केंद्र की स्थापना का मकसद भारत-दक्षिण एशिया-अमेरिका वार्ता के लिए एक मंच उपलब्ध कराना है। वह कहती हैं, ''इसे सिर्फ कारोबार या सामाजिक मसले या कला-संस्कृति तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह संबंधों को मजबूती देने की प्रक्रिया है और इसका तानाबाना तो इंसान ही बुनते हैं। इसीलिए इस काम में कला और संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका है जो कई तरह के मतभेदों को दरकिनार कर देती है।

भागीदारी कायम करना अहम है और उनकी मूल पृष्ठभूमि इसमें अहम भूमिका अदा करती है। वह कहती हैं, ''सोसायटी के एशियाई लोगों से जुड़ने में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि मैं खुद एशियाई मूल की हूं, बजाय इसके कि इस संस्था को किस रोशनी में देखा जाता है। यह हमारी इस इच्छा के अनुकूल है कि सोसायटी को सच्ची बहुराष्ट्रीय संस्था के रूप में देखा जाए न कि सिर्फ एक अमेरिकी संस्था के रूप में। मैं सोचती हूं कि मेरी मौजूदगी इस संस्था की विश्वसनीयता में इजाफा करेगी।'' □

लेखिका: *रमोला तलवार बदाम मुंबई में रहती हैं और लेखन से जुड़ी हैं।*